ISSN 2394-5427
RNI/MPBIL01987

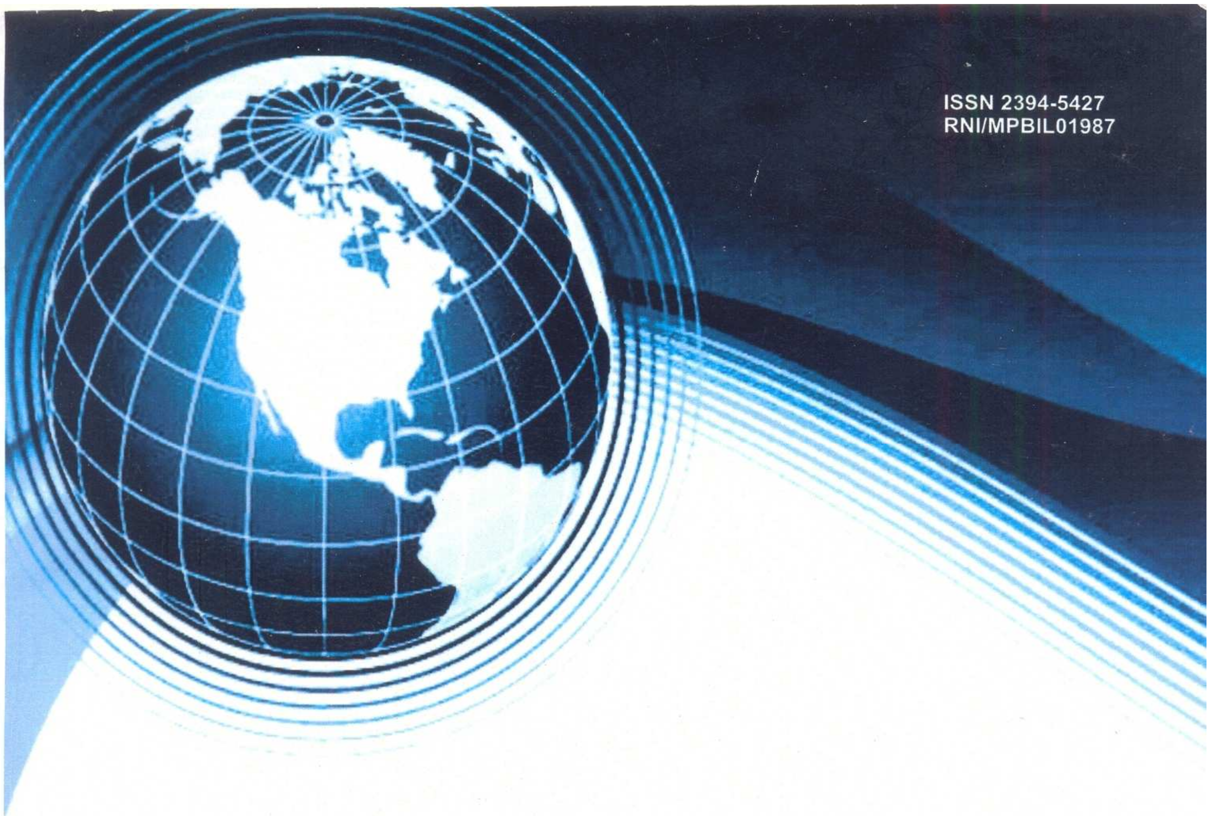

ग्लोबल रिसर्च केनवास

बहुविध विषयों की त्रैमासिक शोध पत्रिका

माह जनवरी-मार्च 2017 प्रथम अंक

GLOBAL RESEARCH CANVAS

MULTIDISCIPLINARY REFEREED RESEARCH JOURNAL

Month of Jan- Mar. 2017 VOLUME-I

अनुक्रमणिका

Analysis of Foreign direct investment in India 5-13
Rashmi Soni/Dr. Avinaash Vajpayee

Human Rights of Women In India 14-17
Dr. Anjani Kumar Jha

निर्गुण भक्त कवियों का सामाजिक चिंतन 18-22
प्रो. चन्दा बैन/भारती कोरी

कृषि विकास में संचार माध्यमों की भूमिका 23-30
डॉ. (श्रीमती) अनुराधा शर्मा

बुन्देली साहित्य में मानवीय मूल्यों की अवधारणा 31-35
डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा

निर्गुण भक्त कवियों का सामाजिक चिंतन

प्रो. चन्दा बैन
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मप्र)
-भारती कोरी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मप्र)

निर्गुण दलित भक्त कवियों का साहित्य मध्ययुगीन भारतीय समाज का प्रतिबि ब हैं, उन्होंने सामाजिक भाव भूमि पर ही आध्यात्म का पौधा रोपा। साहित्यकार की कल्पना चाहे आकाष में विचरण करती रहें परन्तु उसके पाँव उस धरती पर रहते हैं, जहाँ वह रहता है। ये कवि ऐसे कवि हैं जिनकी वाणी को स्थान और काल की सीमाओं में बाँधकर नहीं रखा जा सकता। प्रायः निर्गुण दलित कवियों का संबंध नि न जाति से था, लेकिन फिर भी इन्होंने समाज में फैली सामाजिक बुराईयों को दूर किया। इन कवियों ने सर्वसाधारण के लिए भक्ति के द्वार खोलकर उनमें सामाजिक चेतना का संचार किया। निर्गुण दलित भक्त कवियों की आध्यात्मिक दृष्टि संतुलित एवं सामाजिक रही हैं। मध्यकालीन सामाजिक व्यवस्था में वर्ण व्यवस्था के नियम अत्यन्त कठोर थे। समाज में नि न जाति के व्यक्तियों का बहुत अधिक शोषण किया जा रहा था, उन्हें समाज में रहकर अनेक यातनाएँ सहनी पड़ती थी। इस तरह भारतीय समाज में निर्गुण दलित कवियों द्वारा इसका विरोध हुआ और वह सामाजिक चेतना के प्रतिनिधि के रूप में अवतरित हुऐ। अशिक्षित, निर्धन एवं अकेले होते हुए भी इन कवियों ने सदियों से चली आ रही सामाजिक विसंगतियों जैसे- वर्णव्यवस्था, ब्राह्मणवाद का विरोध, मूर्तिपूजा का खंडन, सामाजिक संस्कार, पर पराएं, अशिक्षा आदि अनेक बुराईयों के विरूद्ध खुले आंदोलन का सूत्रपात किया।

भारतीय समाज में अनेक कुरीतियाँ प्रचलन में थी। जिसके कारण दलित वर्ग निराश, हताश और शोषितों का जीवन जी रहा था। इसी व्यवस्था के आधार पर व्यक्तियों के कर्म एवं व्यवसाय निर्धारित होते थे। भारतीय

समाज में वर्ण व्यवस्था अनेक जाति एवं उपजाति में विभाजित हो चुकी थी। चारों वर्णों को उनकी जाति के अनुसार व्यवसाय करने का अधिकार था। समाज का उच्च वर्ग, नि न वर्ग पर अपना अधिकार जमायें हुआ था, पूरे समाज पर उनका वर्चस्व था। दलित व्यक्ति अपनी नि न सामाजिक दशा के लिए अपने पूर्वजन्म का फल समझकर चुपचाप हर अत्याचार को सहन करते। समाज में उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी, ऐसे समय में दलित निर्गुण कवियों ने इस बुरी मानसिकता को तोड़ा और दलितों में मानवीय गरिमा का संचार किया।

निर्गुण कवियों में चाहे कबीर, रैदास, दादू आदि कवियों ने अपनी वाणी के माध्यम से इस समाज में फैली कुरीतियों का विरोध करते हुए उच्च जाति के वर्चस्व को लगाम लगाकर दलितों के प्रति संघर्ष किया। ''निचली जातियों पर इन संतों ने जो उपकार किये, उनको वे कभी भुला ही नहीं सकती। समाज के निचले धरातल से उठाकर उन्होंने यह बता दिया कि अपनी अनवरत तपस्या और साधना से वे उच्च जातियों से कहीं आगे बढ़ सकते हैं। संतों ने नि न जातियों पर हो रहे उच्च वर्ग के अत्याचारों का खण्डन कर उसे रोका और इतना ही नहीं, अपितु उन्होंने नि न वर्ण को इस्लाम धर्म की ओर प्रवृत्त होने से बचा लिया।''[1] इसी तरह कबीर ने भी ब्राह्मण और शूद्र के मध्य जातीय भेद को व्यर्थ कहा है-

एक बूँद एकै मल मूतर,
एक चाम एक गूदा
एक जोति के सब उत्पन्नां
कौन ब्राह्मण कौन सूदा''[2]

इस तरह सभी निर्गुण दलित कवियों ने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया और समाज को एक नये ढाँचे एवं नई व्यवस्था के प्रति अग्रसर किया। निर्गुण संत कवियों ने ब्राह्मणवाद का विरोध करते हुए उनके अहंकार, पाखंड एवं छुआछूत को अपनी रचना का विषय बनाया। निर्गुण कवियों के अनुसार कोई भी व्यक्ति वेद या पुराण पढ़कर यदि पंडित बन जाता तो समाज में भेदभाव का अंत हो जाता। निर्गुण कवियों में चाहे कबीर, रैदास आदि कवियों ने ब्राह्मणों को पाखंडी, अज्ञानी और विवेकहीन बताकर उनका खुला विरोध किया है। रैदास भी ब्राह्मणों की श्रेष्ठता पर व्यंग करते हैं।

''थोथा पंडित थोथी बानी,
थोथी हरि विन सवैकहानी
थोथा मंदिर भोग विलास,
थोथी आन देव की भाषा।।''[3]

हिन्दू समाज में पर परागत रूप से व्यक्ति का परिचय उसके कुल और उसकी जाति से किया जाता है। निर्गुण संत कवि भी नीची समझी जाने वाली जातियों में पैदा हुए वे जात-पात के कट्टर विरोधी थी। इस तरह इन निर्गुण भक्त कवियों ने समाज में मेल-जोल बढ़ाने के लिए भारत के कई संतों ने समय-समय पर महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐसे संतों में संत रैदास भी थे। रैदास ने अपनी वाणी एवं उपदेषों के माध्यम से समाज में नई चेतना का संचार किया। उन्होंने लोगों को पाखण्ड एवं अंधविश्वास छोड़कर सच्चाई के पथ पर आगे बढ़ने के लिए कहा।

उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार, परोपकार तथा सद्व्यवहार का पालन अतिआवश्यक है। इसी तरह कबीर भी मानते थे कि जब तक कोई व्यक्ति अपने को ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कहता रहेगा या फिर जातिगत श्रेष्ठता के नाम से जाना जाऐगा तब तक वह ईश्वर का सच्चा भक्त हो ही नहीं सकता, क्योंकि सच्चे ईश्वर प्रेमी को जाति का अभिमान त्यागना पड़ेगा। काम, क्रोध, लालच, जाति, वर्ण के अभिमान को त्यागे बिना कोई भी ईश्वर का प्यारा नहीं हो सकता।

''जब लगि नाता जाति का,

तब लगि भक्ति न होय।

नाता तोड़ें हरि भजै,

भक्त कहावै सोय।।''[4]

इस तरह इन निर्गुण कवियों ने विरोध के साथ ही साथ समाज में रहने वाले व्यक्तियों को उनके प्रपंचों से मुक्त कराने का प्रयास किया। इन संतों ने सामाजिक व्यवस्था के रहते हुए मूर्तिपूजा एवं अवतारवाद का भी विरोध किया है। तत्कालीन समाज में बहुप्रचलित उपासना-रूपों में मूर्तिपूजा का स्थान प्रमुख था। धर्म के ठेकेदारों ने ईश्वर को मंदिर-मस्जिद व मूर्तियों तक ही सीमित कर दिया था, वे भूल गये कि मूर्ति को एक साधन मात्र है उन्होंने तो इस साधन को साध्य ही बना डाला।

निर्गुण कवियों ने देखा कि व्यक्ति मूर्तिपूजा करके और वेदपुराण पढ़कर हिन्दू मर गये और सिर झुका-झुकाकर और नमाज पढ़-पढ़कर मुसलमान। लेकिन इन कर्मकाण्डों से कुछ नहीं होने वाला। इन कवियों ने जनता को इस भ्रमजाल से बाहर निकालने के लिए पत्थर की पूजा को निरर्थक बताया है। पत्थर से भला आशा ही क्या की जा सकती है।

''पाहन कूं का पूजिए,

जे जनम न देइ जबाब।

अन्धा नर आसामुखी,

यों ही खाबै आब।।''[5]

इसी तरह कबीर ने भी दसों अवतारों का खण्डन किया है क्योंकि वह तो निर्गुण, निराकार ईश्वर को महत्व देते हैं। दादू ने भी अवतारवाद का विरोध करते हुए कहते हैं कि जन्म-मरण के बीच में आने वाला जीव होता है, राम नहीं। इसी तरह अवतारवाद के विरोधी कारणों का विवेचन करते हुए बड़थ्वाल लिखते हैं कि ''अवतारवाद विरोध का एक प्रधान कारण यह भी हो सकता है कि उसके द्वारा नर-पूजा का विधान हो जाने के कारण धर्म में पाखण्ड घुसने का मार्ग मिल जाता है।''[6] इन निर्गुण कवियों ने अवतारों को किसी भी रूप में ग्रहण नहीं किया। वे इस सिद्धांत के कट्टर विरोधी थे कि ईश्वर नरदेह धारण करते हैं, क्योंकि ये कवि तो सिर्फ निराकार ब्रह्म की कल्पना करते हैं। इन्होंने हिंदू एवं मुसलमान की पूजा अर्चना को व्यर्थ समझा और दोनों धर्मों को उचित मार्ग दिखाने का पत्यन किया, जिससे उनका आपसी वैमनस्य दूर हो सकें। इन कवियों ने तो शरीर को ही मंदिर-मस्जिद कहा है और निर्गुण ब्रह्म का संदेश दिया जो मंदिर-मस्जिद की तरह अल्प और छोटा न होकर व्यापक और विशाल हैं।

भारतीय समाज सामाजिक कुरीतियों से पूरी तरह ग्रसित था ऐसे में इन कवियों ने अपने प्रयासों से इस समाज को बुराईयों से दूर करने का प्रत्यन किया। समाज दिन पर दिन इन बुराईयों से जर्जर होता जा रहा था। इन सामाजिक कुरीतियों में सबसे बड़ी समस्या शिक्षा का अभाव था क्योंकि शिक्षा केवल उच्चवर्ग के व्यक्तियों के लिए थी। समाज में छुआछूत, बालविवाह, सतीप्रथा, मृत्युभोज कई ऐसी बुराईयाँ थी जो आज भी हमारे समाज में व्याप्त हैं।

इन समस्याओं को देखते हुए निर्गुण कवियों ने इनका प्रतिहार किया और समाज से इन बुराईयों को दूर करने का अथक प्रयास किया। ''उदारता के लिए जाना जाने वाला हिंदू समाज जातियों के कठोर बंधन में बंधकर अपने ही समाज के लोगों से अलग कर रहा था। निराशा से भरी नि न जातियों के पास दो ही मार्ग शेष थे, या तो वे धर्म परिवर्तन कर समाज में अपने स मान को श्रेष्ठ बनाते या फिर उसी धर्म में रहकर उपेक्षा और घृणा सहते हुए कभी अपने ही सामाजिक स मान को प्राप्त करने की लड़ाई या किसी चमत्कार से उच्चवर्गों के विचारों से परिवर्तन का इंतजार करते।''[7]

इस तरह इन निर्गुण कवियों ने समाज में व्याप्त

छुआछूत का भी खुलकर विरोध किया। कबीरदास ने सामाजिक संस्कारों का विरोध करते हुए कहते हैं कि इस संसार में पुत्र जीवित होने पर अपने माता-पिता की सेवा नहीं करता और उनके प्रति अच्छा व्यवहार भी नहीं करता, लेकिन इन रूढ़ियों के रहते वही पुत्र पिता के मरने के बाद अनेक प्रकार के लोकाचारों का पालन करता है। जीवित होने पर उसे पानी नहीं देता लेकिन मृत्यु के बाद उसका पिंड अर्पित करता है। इन्हीं सब रूढ़ि पर पराओं के रहते समाज पूरी तरह से अस्त-व्यस्त था; कबीरदास कहते हैं कि -

''जीवत पिंत्रहि मारे डंडा,
पित्र ले घालै गंगा।
जीवत पित्रकूं अन न यावे,
मूवा पाछै त्यंड भरावै।।''[8]

निर्गुण दलित कवियों ने समाज की अव्यवस्था को देखते हुए समाज की सभी बुराईयों को नकारा है, और समाज में समानता लाने का निरंतर प्रयास करते रहे। जिस काल में स पूर्ण भारतीय समाज सामाजिक विषमता को धर्म पूर्वजन्मों का फल मानकर तन और मन से स्वीकार कर चुका था, ऐसे में निर्गुण कवियों ने सामाजिक विषमता के विरूद्ध सामाजिक समता के गीत गाये। समाज धर्म, जाति एवं खान-पान पर आधारित था। इन कवियों ने समस्त प्राणियों को एक ही ब्रह्म से उत्पन्न माना है, इनमें न कोई छोटा है न कोई बड़ा, क्योंकि ईश्वर ने समस्त प्राणियों को एक ही मिट्टी से बनाया है-

''एकै माटी के सब भांडे,
सब का एकै सिरजनहार।
रैदास व्यापै एकौ घट भीतर,
सभ को एकै घड़ै कु हार।।''[9]

इन निर्गुण कवियों ने सामाजिक ऊँच-नीच के समर्थकों को भी मूर्ख बताया। रैदास एवं दादू की तुलना में सामाजिक विषमता पर कबीर के स्वर कुछ अधिक कठोर थे। ''कबीर विद्रोही संत थे, उन्होंने रूग्ण रूढ़ियों का निषेधकर उनकी भर्त्सना की। कबीर पर परा को धिक्कारते हैं पोथी, पंडितों की कड़ी टीका करते हैं। कबीर को ब्राह्मण, शूद्र भेद अस्वीकार था। कबीर ने दोहों में विषमता और पाखंडीपन के प्रति दग्ध संताप पाया जाता हैं।''[10]

इसी तरह निर्गुण कवियों ने उच्च जातियों द्वारा नियोजित विषमता के विरूद्ध शंखनाद करते हुए सामाजिक समता का संदेश दिया। निर्गुण कवियों ने सामाजिक, आर्थिक, एवं धार्मिक असमानता के स्थान पर सभी प्रकार की समानता बताकर प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से ईश्वर का अंश माना है।

''दादू सम करि देशिम,
कुंजर कीट समान।
दादू दूबध्या दूरि करि,
तजि आपा अभिमान।।''[11]

इस तरह इन निर्गुण भक्त कवियों ने भारतीय समाज में फैले विभिन्न धर्मों तथा मतों को दूर कर सबसे मेल-जोल और भाईचारे की भावना को बढ़ाने का प्रयास किया। इन कवियों ने समाज में फैली कुरीतियों का प्रतिकार किया और समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप से यही कहा जा सकता है कि इन निर्गुण भक्त कवियों ने समाज विषयक सभी कुरीतियों का विरोध किया और समाज में नई चेतना का विकास किया। निर्गुण भक्त कवियों का चिंतन भावनापूर्ण था। अत: इन कवियों ने सामाजिक विषमता और रूढ़ि पर पराओं का विरोध कर मानव के अंदर समानता का भाव पैदा किया और समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर

किया, जिसका मानव धर्म और समाज पर अमिट प्रभाव पड़ा। समाज में फैली छुआछूत, ऊँच-नीच को दूर कर इन भक्त कवियों ने बताया कि मनुष्य अपने आचरण और व्यवहार से महान होता है न कि अपने जन्म और व्यवसाय के आधार पर।

अत: इन निर्गुण भक्त कवियों ने सामाजिक व्यवस्था के उस पहलू का विद्रोह किया, जिसमें वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथा, छुआछूत, बाह्यड बर, अंधविश्वास एवं रूढ़ि पर परा आदि कई समस्याओं का विद्रोह किया और समाज के व्यक्तियों को नई राह दिखाई। इन कवियों ने अपनी वाणी के माध्यम से तत्कालीन समाज में रहने वाले व्यक्तियों को फटकारते हुए कहा कि गुलामी पाप है। अत: समाज से इस पराधीनता को दूर करना है। इस तरह इन निर्गुण भक्त कवियों ने संपूर्ण समाज को जाति, धर्म आदि के भेदभावों को त्यागकर एक होने का संदेश दिया।

संदर्भ :

1. सिंह कुमार रविन्द्र, दादू काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 67
2. दास श्यामसुंदर, कबीर ग्रंथावली, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, पन्द्रहवां संस्करण, पृ. 231
3. शर्मा वी.पी.डॉ., संतगुरु रविदास वाणी, सूर्य प्रकाशन, नयी सड़क, दिल्ली, पृ. 98-99
4. चंचरीक कन्हैयालाल, महात्मा कबीर जीवन और दर्शन, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन बी-137 कर्मपुरा, नयी दिल्ली, पृ. 54
5. दास श्यामसुंदर, कबीर ग्रंथावली, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, पृ. 34
6. बड़ वाल पीता बरदत्त डॉ.,हिन्दी काव्य में निर्गुण स प्रदाय, अवध पब्लिशिंग हाऊस, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2003, पृ. 221
7. श्रीवास्तव राजीव डॉ., मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नयी दिल्ली, 2011, पृ. 25
8. कबीर ग्रंथावली, पृ. 87
9. सिंह एन. डॉ., संत कवि रैदास : मूल्यांकन और प्रदेय, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2015, पृ. 28-29
10. लिंबाले शरणकुमार डॉ., दलित साहित्य : वेदना और विद्रोह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 22
11. चतुर्वेदी परशुराम, दादू ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृ. 274